ध्यान – पीत त्रिकोणे-केशरं च श्वासेदित्यां त्रिलोचनाम्।
कृष्ण-वर्णं रक्त-वस्त्रं शशांकीतं भयानकाम्॥
मुण्डमालां धरां दिव्यां धारयन्तीं चतुर्भुजैः।
खड्गाख्यं मस्तकं च वरं चैवाभयं तथा॥

इस प्रकार करने एवं श्री क्रमों के साधकों को सम्बटाक्षनुसार पंचांग का उपयोग पहिले कर लेना है।

पूज्यपाद श्री अनन्त श्री स्वामी जी महाराज ने प्रति मास में कब से कब पंचांग का आरम्भ ही श्री चक्रार्चन करने के लिए निर्देश दिए थे।

आवश्यक सूचना (१)

मुहूर्त तथा एवं कृष्ण पक्ष की दोनों अष्टमी, अमावस्या पूर्णिमा एवं संक्रांति के पर्व में पूजा करने के लिए इस पंचांग में यथास्थान "पूजा" शीर्षक लिखकर संकेत कर दिया गया है। अतः साधकों से सविनय निवेदन है कि वे साधक प्रतिदिन तांत्रिक सन्ध्या,

पंचांग का पर्वों पर यन्त्र पूजन, अर्चन आदि इस तांत्रिक पंचांग की सहायता से करते हों उन्हें चाहिये कि जिस स्थान पर स्वयं हों उस स्थान के प्रचलित पंचांग की सहायता से तिथि का शोधन कर संकल्प से लगाकर बोलने का कष्ट करें।

पूज्यपाद श्री अनन्त श्री स्वामी जी महाराज दतिया की कृपा एवं प्रेरणा से यह पंचांग साधना के उपयोग में लाने के लिये लिखा गया है। इसमें भूल या असावधानीवश कोई त्रुटि रही हो तो इसमें हमारा दोष समझकर पाठकगण कृपापूर्वक क्षमा करेंगे एवं त्रुटि के बारे में हमें लिखेंगे तो भविष्य में उसे भी सुधारने का प्रयत्न किया जायेगा।

– प्रार्थना –

महादेवि महेशानि महाशिवे महाप्रिये।
महानित्ये महासिद्धे त्वामहं शरणं व्रजे॥
तिष्ठ मे हृदये नित्यं त्रिपुरे परमेश्वरि।
जगदम्ब महामाये महाशक्ति शिवप्रिये॥

श्री गुरुपादारविन्दरज अनुरागी
हरिराम सावला-न्यासी
एवं
डॉ. मोतीलाल खटुरशाखी (मास्टरजी)

ध्यान – ओं ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रूं फट्
ध्यान – ललोल्लासेद् परमुदां प्रत्यालीढ-पद-स्थिताम्
चतुर्भुजां त्रिनेत्रां मुण्डमाल-विभूषिताम्॥
रक्त-वर्णां मुक्त-केशीं खड्गेन्दीवर धारिणीम्
कपाल - कर्तृकाहस्तां वरदान - पराक्रमाम्॥

पाठकगण को ज्ञात हो कि पूज्य स्वामी जी महाराज द्वारा विरचित यह तांत्रिक पञ्चांग हमारे देश में अपने ढङ्ग का विलक्षण और एकमात्र पंचांग है, लंदन के सुप्रसिद्ध प्रकाशक सुदर एण्ड कम्पनी द्वारा प्रकाशित "THE TANTRIC TRADITION" के Bibliographical Section के पृष्ठ ३११ पर इस अद्वितीय पञ्चांग के सम्बन्ध में इस प्रकार उल्लेख किया गया है।

9. ŚIVA

SATYA Swami Tantrika panchanga five limbs of tantric worship a short treatise well known both in Bengal and the South" CH. SS. 002/63

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णे, चं सप्ते, हं शब्दे, हस्खें खर्वे, ळीं रात्रे, सस्खें महापरिवृती, शून्यं महायुगे, खं तृतीय युगे, दं एकोनिंशति परिवृती,
खं सदाशिव तृतीय वर्षे, कुमारिका ऋतौ, अं चित्रा मासे (तदनुसार दिनांक 3 मार्च 2013 से 20 मार्च 2013 पर्यन्त)

फाल्गुन कृष्ण 6 से फाल्गुन शुक्ल 6 – संवत् 2069, शक: 1934

क्रमांक	दिनांक	वार	दिनमान	घटी	घटीमान	नक्षत्रस्वामी	नक्षत्र	योगस्वामी	योग	करण	तिथि	वार	नक्षत्र	योग	करण	विशेषता	टिप्पणी
1867897	3 मार्च 2013	रविवार	29–49	6	29–32	भं	रवं	अं	ऋं	अ	ए	लृं	अं	ऋं	भगवती	–	
1867898	4	सोमवार	29–53	7	23–47	मं	द्रुं	कं	ॠं	तृं	ष	लृं	आं	ॠं	देवी	–	पूजा
1867899	5	मंगलवार	29–57	8	18–47	यं	तंयं	खं	लृं	क	त	एं	इं	लृं	शिवा	–	मोहिनी योग
1867900	6	बुधवार	29–01	9	13–33	रं	दंयं	गं	लृं	ष	ष	ऐं	ईं	लृं	शाम्भवी	–	
1867901	7	गुरुवार	29–05	10	08–12	लं	नंयंबं	घं	ए	ट	अ	ओं	उं	ए	काली	शक्ति	
1867902	8	शुक्रवार	29–10	11–12	02–52 57–44	शं	भंमंयं	ङ	ऐ	त	ए	औं	ऊं	ऐ	कला	–	
1867903	9	शनिवार	29–14	13	53–07	सं	लंयं	चं	ओं	प	ष	अं	ऋं	ओं	मालिनी	–	श्रीकरी योग
1867904	10	रविवार	29–18	14	49–15	हं	शंयं	ण	औं	ग	त	अ	ॠं	औं	मातंगी	–	
1867905	11	सोमवार	29–22	30	46–26	क्षं	संहक्षं	जं	अं	श	ष	क	तृं	अं	विजया	–	पूजा
1867906	12	मंगलवार	29–26	1	44–57	अं	अंकं	झं	अं	अ	अ	खं	लृं	अ	जया	–	
1867907	13	बुधवार	29–30	2	44–58	कं	खंगं	ञ	औं	तृं	ए	गं	एं	कं	भगवती	–	
1867908	14	गुरुवार	29–34	3	40–38	खं	घंढं	ट	ओं	क	ष	ष	ऐं	खं	देवी	–	मीने अर्क
1867909	15	शुक्रवार	29–38	4	49–56	गं	धंषं	ठं	ऐं	ष	त	ढ	औं	ऋं	शिवा	–	
1867910	16	शनिवार	29–42	5	54–45	घंढं	जंझंत्रट	ढं	एं	ट	ष	ष	औं	ॠं	शाम्भवी	–	
1867911	17	रविवार	29–47	6	60–00	चं	ठंडं	ढं	लृं	त	अ	छ	अं	लृं	काली	शंकरवल्लभा	
1867912	18	सोमवार	29–51	6	00–48	षं	ठंडं	णं	लृं	प	ए	ज	ऊं	लृं	कला	–	
1867913	19	मंगलवार	29–55	7	07–22	छं	ढंणं	तं	ॠं	य	ष	झं	कं	एं	मालिनी	–	पूजा
1867914	20	बुधवार	29–59	8	13–53	जं	तंथं	थं	ऋं	श	त	ञ	खं	ऐं	मातंगी	–	